The Dedication Ceremony

As used in the Triratna Buddhist Community

In Hindi and English

समर्पण समारोह

यह समारोह विहार के उद्घाटन के समय विहार में तथागत की मूर्ति की स्थापना करते समय किया जाता है। ऐसे समय पर वातावरण अति शांत एवम् सुखद रहना चाहिएं न तो उच्च स्वर में कर्कश आवाज के साथ लाउडस्पीकर से गाने बजाने चाहिए और न अन्य किसी प्रकार की कोई गडबड करनी चाहिए। सिनेमा आदि के गाने बिलकुल नहीं बजाने चाहिए जो समयानुकूल सार्थक नहीं हैं। अपितु मनमोहक उत्तम शास्त्रीय संगीत शहनाई वादन आदि बजाना उत्तम हैं।

प्रथमतः पूजा स्थान योग्य प्रकार सजाना चाहिए और उसके पश्चात सभी उपस्थित समाज को तीन बार विधिवत पंचांग प्रणाम करना अपेक्षित है अथवा संख्या एवम् समयानुसार प्रमाण करें। तब सभी सामुहिक रूप से त्रिशरण, पंचशील व सकारात्मक पंचशील बोले। उसके पश्चात विधिकर्ता को 'समर्पण समारोह' कार्यक्रम पहले बोलना है और जो सभी उपस्थितों को पीछे-पीछे उसका अनुसरण करना है। इसके पश्चात विधिकर्ता ने बुद्ध पूजा, त्रिरत्न वंदना, महामंगल सुत्त, जयमंगल अट्ठगाथा, करणीयमेत्त सुत्त के उपरान्त धम्मपालन गाथा कहकर समारोह सम्पन्न करना चाहिए। धम्मपालन गाथा के पहले प्रवचन किया जाए।

समर्पण समारोह :-

हम यह क्षेत्र त्रिरत्नों को समर्पित करते हैं ।
मानवी सम्बोधि का आदर्श
ऐसे बुद्ध को
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
जिस धम्ममार्ग के आचरण हेतु हम सिद्ध हुए हैं,
ऐसे धम्म को
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
जहाँ आपस में कल्याण मैत्री का आनंद हम लेते हैं,
ऐसे संघ को
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
यहाँ किसी भी व्यर्थ शब्दोंका उच्चारण ना हो ।
न यहाँ चंचल विचारों से हमारे मन
कंपीत हो ।
पञ्चशीलों के परिपालन के लिए,
ध्यान साधना के अभ्यास के लिए,

We dedicate this place to the Three Jewels:

To the Buddha, the Ideal of Enlightenment to which we aspire;

To the Dharma, the Path of the Teaching which we follow;

To the Sangha, the spiritual fellowship with one another which we enjoy.

Here may no idle word be spoken;

Here may no unquiet thought disturb our minds.

To the observance of the Five Precepts

We dedicate this place;

To the practice of meditation

We dedicate this place;

To the development of wisdom

We dedicate this place;

To the attainment of Enlightenment

We dedicate this place.

प्रज्ञा के विकास के लिए,
और संबोधि की प्राप्ति के लिए,
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
भले ही बाह्य जगत में संघर्ष प्रदीप्त हो,
परन्तु यहाँ मात्र शान्ति रहे ।
भले ही बाह्य जगत द्वेषाग्नी से भभक रहा हो,
परन्तु यहाँ मात्र मैत्री रहे ।
भले ही बाह्य जगत दुःख प्लवित हो,
परंतु यहाँ मात्र आनन्द रहे ।
केवल पवित्र समझे गये ग्रंथो के पठन से नहीं,
अथवा पवित्र समझे गये जल के सिंचन से हि नहीं,
बल्कि सम्बोधि प्राप्ती के प्रयासों द्वारा,
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
इस परिमण्डल के सभी ओर,
इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर,
परिसुद्धी के विमल कमलदल खिले ।
इस परिमण्डल के सभी ओर
इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर,
दृढ़ संकल्पों का वज्र-तट खड़ा रहे ।
इस परिमण्डल के सभी ओर

Though in the world outside there is strife

Here may there be peace;

Though in the world outside there is hate

Here may there be love;

Though in the world outside there is grief

Here may there be joy.

Not by the chanting of the sacred Scriptures,

Not by the sprinkling of holy water,

But by own efforts towards Enlightenment

We dedicate this place.

Around this Mandala, this sacred spot,

May the lotus petals of purity open;

Around this Mandala, this sacred spot,

May the vajra-wall of determination extend;

Around this Mandala, this sacred spot,

May the flames that transmute Samsara into Nirvana arise.

इस पवित्र क्षेत्र के सभी ओर
संसार का निर्वाण में परिवर्तन करनेवाली,
अग्निज्वाला प्रदीप्त हो ।
यहाँ बैठकर, यहाँ अभ्यास कर,
हमारा मन 'प्रबुद्ध' बने ।
हमारे विचार 'धम्म' बने
और हमारे आपसी सम्बन्ध 'संघ' बने ।
सभी प्राणियों के सुख के लिए,
और सभी प्राणियों के हित के लिए,
काया, वाचा, और मन से
हम यह क्षेत्र समर्पित करते हैं ।
(पूज्य महास्थविर संघरक्षितजी द्वारा रचित
इंग्लिश पाठ का हिन्दी अनुवाद)

नोट : स्मरण रहें की बौद्ध विहार धम्म संस्कारों के केंद्र होते हैं । उन्हे राजकारण, गुटबाजी और सत्तास्पर्धा के केंद्र होने से बचाना चाहिए। वे सभी जनों के लिए हमेशा मुक्त रहने चाहिए । विहारों की प्रबंध-व्यवस्था सुशील, विनम्र एवं धम्मजीवन जीनेवाले सदाचारी लोगों के हाथों में होनी चाहिए, दुराचरण और व्यसन करनेवालों के नहीं। उनका धम्मकार्य हेतु निरंतर प्रयोग होना चाहिए । बौद्धजनोंने इस दृष्टिसे हमेशा सावधानी बर्तानी चाहिए ।

Here seated, here practising,

May our mind become Buddha,

May our thought become Dharma,

May our communication with one another be Sangha.

For the happiness of all beings,

For the benefit of all beings,

With body, speech, and mind,

We dedicate this place.

Part of the Triratna Translations project.

For more, see http://www.thebuddhistcentre.com/translations